दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ & Fax : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : digvijayans@gmail.com
: dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनांक 17.09.2019

प्रकाशनार्थ

आज दिनांक 17.09.2019 को महाविद्यालय में ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज की 50वीं एवं ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी महाराज की 5वीं पुण्यतिथि पर मुख्य अतिथि के रूप में उन्हे अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए प्रो. रामअचल सिंह पूर्व कुलपति राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद ने कहा कि संत वह होता है जो सर्व समाज के कल्याण के लिए जीता है और दो महामनीषियों ने गोरक्षपीठ को केन्द्र बनाकर सम्पूर्ण भारत में राष्ट्रीयता, शिक्षा, सामाजिक समरसता, सह–शिक्षा और भारतीय संस्कृति की सुरक्षा का जो अलख जगाया वह निश्चित रूप से राष्ट्रहित में एक मील का पत्थर साबित हुआ। राजनीति को तो इन्होने अपने समाजसेवा का एक आधार मात्र बनाया इन संतो का यह मानना था हिन्दुत्व किसी धर्म, जाति और साम्प्रदायिकता का पर्याय नहीं बल्कि यह एक जीवन शैली है। और इन दोनों महापुरूषों के रगो में भारतीयता और राष्ट्रीयता का रक्त प्रवाहित होता था। इनकी संकल्पना, वसुधैव कुटुम्बकम की थी। इन्होने रामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानन्द के समान भारत में व्याप्त समस्त सामाजिक बुराईयों को दूर करने का प्रयास किया और ऐसे संतों के विचार और आदर्श समाज में सदा जीवित रहते हुए प्रासंगिक बने रहते हैं और इनके आदर्शों और विचारों के अनुरूप आचरण करना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धाजंलि होगी।

आज के श्रद्धांजलि सभा की संयोजक डॉ. वीणा गोपाल मिश्र ने कहा कि इन दोनां संतो का राष्ट्रबोध और युगनिर्माण के संकल्प तथा इनके मूल्यों को निष्ठा और श्रद्धा से अनुसरण करना ही इनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। नाथ पंथ में गुरू–शिष्य की अटूट परंपरा है, जिसमें मत्स्येन्द्र नाथ से लेकर गुरू गोरक्षनाथ तक तथा वर्तमान पीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ जी महाराज, उन्ही की परंपरा को जीवन्त बनाये हैं। अतः इन संतो के राष्ट्रवादी विचार सामाजिक समरसता ने भारतीय संस्कृति को एक नई दिशा प्रदान की। अतः ऐसे संतो के मूल्यो का मन, वचन और कर्म से आत्मसात करना ही उनके लिए श्रद्धासुमन है। क्योंकि इनके विचार अजर और अमर होते हैं।

दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ & Fax : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : digvijayans@gmail.com
: dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

सभा की अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह इन महामानवों को अपनी श्रद्धाजंलि अपिर्तत करते हुए कहा कि 1932 में महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज द्वारा गोरखपुर में एक छोटे से भूखण्ड में विद्यालय की नींव रखी और जिसे इन्होने महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद का नाम दिया उसी परंपरा को आगे बढाते हुए महंत अवेद्यनाथ जी महाराज ने और वर्तमान पीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ जी महाराज माननीय मुख्यमंत्री, उ.प्र. सकरार के सतत प्रयास से लगभग 40 से उपर शिक्षण, प्रशिक्षण, चिकित्सा, तकनीकि आदि क्षेत्रों में अनेक संस्थायें स्थापित कर इस पिछड़े क्षेत्र में शैक्षिक पुनर्जागरण की एक नई चेतना पैदा की।

कार्यक्रम के प्रारंभ में महाविद्यालय के समस्त शिक्षकों, कर्मचारियों तथा छात्र/छात्राओं ने इनके प्रतिमा और चित्रों पर पुष्पांजलि अर्पित कर इन्हे अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की तथा प्रत्येक संकाय के प्रभारी जैसे डॉ. रामलाल गाडिया, डॉ. अरूण कुमार तिवारी, डॉ. नीरज सिंह, श्री धर्मचन्द विश्वकर्मा, छात्र कल्याण अधिकारी डॉ. रविन्द्र गंगवार, मुख्य नियंता डॉ. आ.पी. यादव तथा अखण्ड प्रताप सिंह ने संतो के व्यक्तित्व और कृतित्व का उल्लेख करते हुए इनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यक्रम में आभार ज्ञापन डॉ. वीणा गोपाल मिश्रा ने तथा श्रद्धाजंलि सभा का संचालन डॉ. सत्यपाल सिंह ने किया। कार्यक्रम में महाविद्यालय के समस्त शिक्षक, कर्मचारीगण व छात्र/छात्रायें उपस्थित थे।

डॉ.(मुरली मनोहर तिवारी)
सूचना एवं जनसम्पर्क प्रभारी